बृहत्त्रयी में निहित राष्ट्रीय भावना

डॉ0 निर्मला, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बेतालघाट (नैनीताल)

अपने राष्ट्र की भूमि, जनसमूह, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, धर्म, कला, राजनीति जीवन दर्शन आदि के प्रति लोगों के मन में गरिमा तथा महिमा का जो स्वाभविक गर्व होता है, उसे ही हम राष्ट्रीय भावना की संज्ञा देते है। इसके साथ ही राष्ट्र की संस्कृति सम्पदा के केन्द्र, वन, पर्वत, नदी आदि के प्रति अथाह प्रेम गौरव तथा आत्मीयता का भाव ही देशभक्ति है।

संस्कृत भाषा की व्याकरण की प्रकृति एवं प्रक्रिया के अनुसार विचार करने से स्पष्ट कि राष्ट्र शब्द की निष्पत्ति दीप्त्यर्थक धातु ''राज्'' से हुई है, जिसमें औणादिक ''ष्ट्रन्'' प्रत्यय जोड़ा गया है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य का स्वाध्याय करते समय मन तथा बुद्धि में यह तथ्य बड़ी तीव्रता से प्रकाशित होता है कि प्राचीन संस्कृत साहित्यकारों में भी अनेक ऐसे साहित्यकार हुए हैं, जिनकी रचनाओं में राष्ट्रीय भावना की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है।

संस्कृत साहित्य अत्यन्त विशाल है, बृहत्त्रयी शब्द संस्कृत साहित्य में अत्यधिक प्रचलित रहा है। बृहत्त्रयी के अन्तर्गत तीन महाकाव्य आते है। किरातार्जुतीय शिशुपालवधम् तथा नैषधीयचरितम्। इन तीनों महाकाव्यों में अनेक प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन किया गया हैं। उन्हीं विषयों में प्रमुख विषय राष्ट्रीय भावना का है। जिसका वर्णन बृहत्त्रयी में इस प्रकार किया गया है–

किरातार्जुनीयम् में राष्ट्रीय भावना– बृहत्त्रयी में राष्ट्रीय भावना का वर्णन यत्र–तत्र दृष्टिगोचर होता है। किरातार्जुनीय महाकाव्य में भारतदेश के उत्तर दिशा में प्रहरी स्वरूप स्थित हिमालय पर्वत का वर्णन करते हुए कहा गया है। अत्यधिक ऊँचा होने के कारण इस हिमालय का एक हिस्सा सूर्य की किरणों से प्रकाशमान है, दूसरा हिस्सा अंधेरी रात के घने अंधकारों से व्याप्त है। इसकी शिखरमालाएँ अनेक रत्नों की खान है। वहाँ अनेक प्रकार की औषधियाँ प्राप्त होती है, जो रात्रि में अग्नि के समान प्रकाशमान दिखाई पड़ती है।[1] तथा किरातार्जुनीयम् में हिमालय पर्वत को जगत प्रतिनिधि स्वरूप माना गया है।

क्षितिनभः सुरलोकनिवासिभिः कृतनि के मतष्टपस्परैः।
प्रथयितुं विभुताभिनिर्मित प्रतिनिधिं जगताविव शम्भुना।

–किरातार्जुनीयम् 5/3

अर्थात इस हिमालय का भूतल, आकाश और स्वर्ग के निवासी परस्पर अदृष्ट होकर निवास करते है ऐसा ज्ञात होता है कि भगवान शंकर ने अपने ऐश्वर्य को प्रकट करने के लिए इस हिमालय पर्वत को जगत के प्रतिनिधि के रूप में बनाया है।

इसके साथ ही महाकवि भारवि ने गंगा नदी का वर्णन मनोहारी ढंग से करते हुए कहा है कि–

वितशीकरराशिभिरूच्छितैरूपलरोध विवर्तिभिरम्बुभिः।
दधतमुन्नतसानुसमुद्धतां घृतसितव्यजनामिव जाह्नवीम्।

–किरातार्जुनीयम् 5/15

यह हिमालय अपने उन्नत शिखरों पर प्रवाहित हुई गंगा को धारण करता है, जो गंगा बड़ी–बड़ी चट्टानों से रूककर नीचे की तरफ गिरने वाले सलिल को उछालते हुए फुहारे की तरह जलकणों से श्वेत चामर धारण की हुई प्रतीत हो रही हैं।

इस काव्य में राष्ट्रीय पुष्प का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि उसके परागकण को समस्त भारतवर्ष का छत्र निरूपित किया गया है–

उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मादुद्धूतः, सरसिजसंभवः परागः।
वात्याभिर्विदति विवर्तितः समन्तादाधन्ते, कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्।[2]

–किरातार्जुनीयम् 5/22

अर्थात् कैलाश पर्वत पर सामने दिखाई देने वाले स्थल हवा के झोंके के द्वारा उड़ाया गया कमलों का पराग आकाश में मण्डलाकार स्वरूप फैलकर सुवर्ण छत्र के तुल्य शोभित हो रहा है।

अपने देश की उन्नति के लिए राजा के कर्त्तव्य को बताते हुए महाकवि भारवि ने लिखा है–

अपनेयमुदेतुमिच्छत तिमिरं रोषमयं धिया पुरः।

अविभिद्य निशाकृतं तमः प्रभया नांशुमताप्युदीवते।

–किरातार्जुनीयम्। 2/36

अतः उन्नति के अभिलाषी राजा को चाहिए कि वह पहले क्रोध सम अन्धकार को बुद्धि से दूर कर दे, भगवान सूर्य भी रात्रि के अन्धकार को बिना निर्मूल किये उदित नहीं होते है। पराक्रमी एवं साहसी वीर भारतीय सैनिकों का वर्णन करते हुए कहा है कि–

प्रत्याहतौजः कृतसत्वबेगः पराक्रम ज्यायसि यस्तनोति।
तेजांसि 'भानोरिव निष्मतन्ति यशांसि वीर्यज्वलितानि तस्य।

–किरातार्जुतीय 17/15

जो मनुष्य शत्रु से पराक्रमपूर्वक उत्साह से युद्ध करता हुआ साहस दिखाता है, उसका यश सूर्य की किरणों के समान चारों तरफ फैलता है।

महाकवि भारविकृत किरातार्जुनीयम् में अखण्ड भारत की विशेषता का भरपूर चित्रण किया गया है। यहाँ की भूमि वीरों से रिक्त नहीं है, लेकिन अकारण वे हिंसा नहीं करते है, कहा गया है ''क्षमा वीरस्य भूषणम्'' अर्थात् यहाँ के वीरों का आभूषण क्षमा है। इसी क्रम में अर्जुन की विशेषता के रूप में बताते हुए कहा है–

'घृतेतिरप्यधृतजिह्ममतिश्चरितैर्मुनीनधरयंशुचिभिः।
रचयाँचकार विरजाः स मृगान्कमिवेशतेरमपितुंन गुणाः।

–किरातार्जुनीयम् 6/24

इसके साथ ही घूतक्रीड़ा में कौरवों से पराजित पाण्डवों के वन गमन के पश्चात् दुर्योधन का अपने देश के प्रति उत्कट प्रेमभाव दर्शाया गया है। दुर्योधन की उदारता तथा शौर्यादि गुणों से द्रवित सैनिक अपनी जान पर खेलकर भी दुर्योधन का हित करना चाहते है। इस प्रकार दुर्योधन को निर्मल यश वाला दयाभाव वाला तथा प्रजा की उन्नति के लिए तत्पर रहने वाला कहा गया है।

शिशुपालवघम् में राष्ट्रीय भावना– शिशुपालवधम् में बताया गया है स्वदेश की रक्षा शत्रुओं के संहार करने से सम्भव है–

विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा।
अनीत्वा पंकतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते।[3]

–शिशुपालवधम् 2/34

अर्थात् शत्रु का समूल नाश किये बिना प्रतिष्ठा होनी दुर्लभ है, क्योंकि धूलि को बिना कीचड़ बनाये पानी भूमि में नहीं ठहरता है। स्व राष्ट्र चिन्तन करने की प्रेरणा देते हुए भी माघ महाकवि ने कहा है–

तन्त्रावापविदा योगैर्मण्डलान्यविघतिष्ठता।
सुनिग्रहा नरेन्द्रेण फणीन्द्रा इव शत्रवः।

– शिशुपालवधम् 2/88

तन्त्र अर्थात् अपने राष्ट्र का चिन्तन तथा दूसरे राष्ट्र को वशीभूत करता हुआ राजा सरलता से शत्रुओं का दमन उस प्रकार करता है जिस प्रकार तंत्र तथा आवाप को जानने वाला योगों मण्डलों आदि को आक्रान्त करता हुआ सपेरा सांपों को सरलता से वशीभूत करता है।

इस महाकाव्य में द्वारकापुरी का भी अत्यन्त विस्तार से प्राप्त होता है जो कि एक भारतीय शहर का वर्णन है, इस प्रकार श्रीमाघ द्वारा राष्ट्र और राष्ट्रीयता का खुलकर चित्रण हुआ है।

क्षुण्णं यदन्तः करणेन वृक्षाः फलन्ति कल्पोपपदास्तदेव।
अध्युषुषों यामभवंजनस्य याः सम्पस्ता मनसोऽम्य गम्याः।

–शिशुपालवधम्, 3/59

भावार्थ यह है कि ''अन्तःकरण जिसका अभ्यास करता है कल्पवृक्ष उसी को फल देते है, किन्तु द्वारकापुरी में निवास करने वाले व्यक्तियों को प्राप्त सम्पत्तियाँ केवल मानसिक कल्पना से भी परे थी इस प्रकार श्रीमाघ ने द्वारकापुरी को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ रूप में माना है।

शिशुपालवधम् में भी पवित्र नदी यमुना का वर्णन किया गया है जो भारतीय राष्ट्रीयता का समर्थन करता है–

व्यक्त बलीयान् आदि हेतुरागमादपूरयत्साजलधिं न जाह्नवी
गांगौधनिर्भस्मिशभुकरन्धरा मवर्णमर्णः कथमन्यथास्य तत्।

–शिशुपालवधम। 12/64

इस प्रकार महाकवि माघ ने शिशुपालवधम महाकाव्य में इस भारतभूमि की पवित्रता को दर्शाया है। इस देश के कल्याणार्थ भगवान विष्णु द्वारा अनेक अवतार लेने का वर्णन किया गया है। जहाँ भगवान श्रीकृष्ण से मिलने स्वयं ब्रहमपुत्र देवर्षि नारद पधारते हैं तथा धरती पर

शिशुपाल के पाप बढ़ने के कारण उसे मारने का इन्द्र का सन्देश श्रीकृष्ण भगवान को नारमुनि देते है।[4] इसी प्रकार भारतीय संस्कृति के प्राणभूत यज्ञ और यज्ञविधि का वर्णन भी महाकवि श्री माघ के महाकाव्य में यत्र–तत्र उपलब्ध होता है।

नैषधीयचरितम् में राष्ट्रीय भावना– नैषधीयचरितम् में राष्ट्रीयता और सांस्कृतिकता के संदर्भ में राजा नल के दूत के रूप में राजहंस को दर्शाया गया है, जो कि शान्ति और एकता का प्रतीक है।

डॉ0 हरिनारायण दीक्षित अपने ग्रन्थ संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना में लिखते है– ''महाकवि श्रीहर्ष ने अपने नैषधीयचरित महाकाव्य में अपने भारतदेश की महिमा का उद्घोष करते है। वे इसे स्वर्गलोक से भी अधिक आह्लादक सिद्ध करते हैं। उन्होंने दमयन्ती के माध्यम से अपना निर्णय दिया है कि स्वर्गलोंक में पुण्यों का निरन्तर क्षय होने के कारण साथ ही वहॉ पुण्यप्रद कार्यो के करने का अवसर न मिलने के कारण स्वर्गलोक बुद्धिमानों के रहने योग्य नहीं है लेकिन भारत देश में पुण्यजनक कर्मों को करने का पूर्ण अवसर मिलता है। अतः यहाँ के निवासी सर्वश्रेष्ठ है वे दययन्ती स्वयंवर के प्रसंग में भी सरस्वती के माध्यम से मथुरा, वृन्दावन, अयोध्या, काशी, कांची उज्जयिनी आदि भारतवर्ष की प्रसिद्ध सांस्कृतिक नगरों का वर्णन करके आत्मनिर्भर 'राष्ट्र प्रेम' को भली भाँति अभिव्यक्त कर गए।[5]– (नैषधीयचरितम् 6/99)

यह वही भारत देश है जहाँ महर्षि दधीचि ने अपने अस्थियों का दान किया था। इसी का चित्रण श्री हर्ष ने नौषधीयचरितम् में राजा नल के मुँह से कहलवाया है–

आदधीचि किल दातृतार्थ प्राणमात्रपणसीम यशो यत्।
आददे कधमहं प्रियया तत् प्राणतः शतगुणेन पणेन।

–(नैषधीयचरितम् 7/20)

अर्थात जिस दान यश का दानियों के द्वारा मूल्य आँकने पर दधीचि पर्यन्त ने केवल प्राणों की ही अन्तिम सीमा रखी है उस यश को प्राणों से भी सैकड़ों गुना अधिक मूल्य रूप अपनी प्रिया को देकर में अंगीकार कर सकता हूँ। भारत भूमि की अत्यन्त महानता बताने के क्रम में अतिशय तो तब देखने को मिलता है जब भारतभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर बता दिया गया है–

वर्षेषु यद्भारतमार्यधुर्याः स्तुवन्ति गार्हस्थमि वाश्रमेषु।
तत्रास्मि पत्युर्वरिवस्ययेह शर्मो र्निकिर्मीरित धर्मलिप्सुः।।[6]

–(नैषधीयचरितम् 7/98)

अर्थात मन्वादिक महापुरूषों ने आश्रमों में गृहस्थाश्रम की भाँति देशों में भारतभूमि की भूति–भूरि प्रशंसा की है। जिस प्रकार चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम को अन्य तीन आश्रमों का धारावाहक और आश्रय रूप कहा गया है उसी प्रकार संसार के सभी देशों में भारत वर्ष को उनके शिरोमणि रूप में स्थापित किया गया है। इसके साथ ही राष्ट्रीय प्रतीकों की श्रृंखला में राष्ट्रीय वृक्ष को नैषधीचरितम् में इस प्रकार दर्शाया गया है–

न्यग्रोधनामिव दिवः पतदातपादे, न्यंग्रोधमात्मभर धारमिवावरो।
तं तस्य पाकिफलनीलदधुतिभ्यां, द्वीपस्य पश्य शिखिपत्रजमान्यत्रम्।

–(नैषधीयचरितम् 11/107)

इस श्लोक में राष्ट्रीय वृक्ष वटवृक्ष तथा राष्ट्रीय पक्षी– मोर दोनों को समाहित कर लिया गया है।

श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् में सरस्वतीः शिप्रा (नैषधीयचरितम् 12/10,12/17) आदि अन्य अनेक भारतीय नदियों के नाम उपलब्ध होते है। तथा भारतीय देवी–देवताओं का नाम अत्यन्त आदर के साथ अनेक स्थानों पर लिया है। यथा– भगवान शंकर, भगवान पुरूषोत्तम, महिषासुर मर्दिनी दुर्गा, लक्ष्मी पार्वती आदि देवताओं का उल्लेख किया है।

उर्पयुक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि अपने देश के प्रति सच्चा प्रेम ही राष्ट्रीय भावना कहलाता है। हमारे भारत देश में साधारण मनुष्य के अतिरिक्त भगवान ने भी जन्म लिया है जो कि भारत देश की पवित्रता को दर्शाता है। इसके साथ ही बृहत्त्रयी में भारत भूमि की अनेक आकर्षक विशेषताओं में प्रकाश डालकर भारतीयों में राष्ट्रीय भावना पनपाई गई है तथा यहाँ के वनों, पर्वतों, नदियों, समुद्रों आदि की रम्यता और उपयोगिता को उजागर किया गया है। इसके फलस्वरूप भारतीयों के मन में इसकी रक्षा–सुरक्षा हेतु जागरूक रहने का भाव पनपता है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. किरातार्जुनीयम् महाकवि भारवि, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी संस्करण 2002, पृष्ठ–11
2. किरातार्जुनीयम् हिन्दी व्याख्याकार श्री बदरीनारायण मिश्र चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 2002,
3. शिशुपालवधम् माघविरचित, सं0 साहू रामदेव साहू हंसा प्रकाशन, जयपुर 2/114
4. शिशुपालवध महाकाव्य, आशुबोधिनी संस्कृतहिन्दीव्योषेतम्, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी वाराणसी, संस्करण 1985

5. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, डॉ0 हरिनारायण दीक्षित ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली द्वितीय संस्करण ई0 सन्–2006
6. नैषधमहाकाव्यम्, महाकविश्रीहर्षविरचितम्,– डॉ0 शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन जयपुर, संस्करण 2018